सिंधु नदी का भारत में पुनरागमन

सिंधु वह नदी है जिसके तट पर प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता फली-फूली। फिलहाल यह नदी पाकिस्तान में बहती है। मगर गुजरात विश्वविद्यालय की विज्ञान अध्ययन शाला के प्रोफेसर वाय. टी. जसराज द्वारा उपग्रह के आंकड़ों का विश्लेषण दर्शाता है कि संभवतः सिंधु ने अपना मार्ग एक बार फिर बदला है और यह भारत में से होकर गुज़रती है।

प्रोफेसर जसराज जलवायु परिवर्तन कार्यक्रम के मुखिया हैं और सिंधु नदी सम्बंधित उपरोक्त अनुसंधान प्रकाशित करने के लिए तैयार कर रहे हैं। उनके पोस्ट डॉक्टरल छात्र रोहन ठक्कर ने उपग्रह से प्राप्त छवियों का अध्ययन करते हुए देखा कि कच्छ के रन में कुछ नीली रेखाएं नज़र आ रही हैं। ठक्कर व जसराज के मुताबिक ये रेखाएं सिंधु के भारत में मार्ग की द्योतक हैं।

नेचर इण्डिया ऑनलाइन में शुभ्रा प्रियदर्शिनी ने बताया है कि अभी शोधकर्ता अपना शोध पत्र लिखने की प्रक्रिया में हैं और जल्दी ही इसे किसी शोध पत्रिका में प्रस्तुत करेंगे। इसके बाद यह शोध पत्र अन्य शोधकर्ताओं के पास समीक्षा के लिए भेजा जाएगा और उनकी टिप्पणियों के आधार पर ही इसे प्रकाशित करने या न करने का फैसला होगा।

वैसे भौगोलिक प्रमाण दर्शाते हैं कि पहले सिंधु नदी

इसी मार्ग से बहती थी। संभावना यह जताई गई है कि 1819 में आए एक भूकंप के बाद इसने मार्ग बदल लिया था। यह भी माना जा रहा है कि अब सिंधु घाटी में गाद भराव के चलते नदी का मार्ग एक बार फिर बदल रहा है।

जैसे भी हो, यह तय है कि यदि सिंधु अपना मार्ग बदलती है और कच्छ के रन में से बहने लगती है, तो राज्य के कच्छ और भाल क्षेत्रों को बहुत लाभ होगा। फिलहाल ये क्षेत्र पानी के अभाव से जूझ रहे हैं। उम्मीद की जानी चाहिए कि जसराज व उनके साथियों का शोध पत्र समीक्षा की प्रक्रिया से गुज़रकर जल्दी प्रकाशित हो। ***(स्रोत फीचर्स)***